मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

चोर–पुलिस मौसेरे भाई!
लचर ट्रैफ़िक व्यवस्था कैसे सुधरेगी 3

दिल्ली में 'आप' सर
रुपया कायम! अब विदेशी कर्ज के दम पर! 4

''हम ना मुसलमान हैं, ना हिंदू,
ये नौकरियां पानी में जायेंगी या ज़मीन पर उतरेंगी! 6

70 चूहे खाकर बिल्ली हज को चली
महिला सुरक्षा का दिखावा 8

वर्ष 27 अंक 4 फरीदाबाद, बुधवार, 1-15 जनवरी 2014 फोन : - 9999595632 ₹ 2

अपराधियों से बद्तर पुलिस कमिश्नर

हत्यारे आजाद, निर्दोष जेल में बन्द और बर्बाद

फरीदाबाद (म.मो.) क्या आपने कभी सुना है कि हत्या में निर्दोषों पर मुकदमा चलता रहे जबकि दोषियों ने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबूल कर लिया हो। रंगाई-पुताई करनेवाले धर्मेंदर व रमिया को थाना एन आई टी पुलिस ने दिनांक 27.4.12 को उस हत्या के आरोप में गिरफ़्तार कर जेल भिजवा दिया जो उन्होंने की ही नहीं थी। इनका दुर्भाग्य केवल इतना ही था कि दोनों सेक्टर 21 ए की कोठी नम्बर 631 में चौकीदारी करने वाले उस मनु के मिलने वाले थे जिसकी हत्या हुई थी।

हत्या हो जाय और हत्यारा पकड़ा न जाय तो पुलिस की फ़जीहत तबतक होती रहती है जब तक केस 'खुल' न जाय। लिहाजा पुलिस का पूरा ज़ोर रहता है कि किसी भी तरह से हत्यारों को जल्द से जल्द पकड़ कर सलाखों के पीछे भेजा जाय। ऐसे में कुछ नालायक एवं भ्रष्ट पुलिस अफ़सर सार्वजनिक फ़जीहत से बचने तथा वाह-वाही लूटने के चक्कर में किसी को भी हत्यारा बता कर तथा फ़र्जी सबूत जुटा कर उसे जेल अथवा फ़ांसी तक की सज़ा करवा देते हैं। यही सब कुछ उक्त दो ग़रीबों के साथ भी करवाने की पूरी तैयारी फ़रीदाबाद पुलिस ने कर छोड़ी है।

दोनों ग़रीबों की खुशकिस्मती से करीब 8 माह बाद वे हत्यारे चोर भी पकड़े गये जिन्होंने चोरी करते समय मनु की नींद खुल जाने पर उसकी हत्या कर दी थी। सूत्रों द्वारा उपलब्ध कराई गयी जानकारी

बेगुनाहों को हत्यारोपी बनाने वाले

शत्रुजीत सिंह कपूर
सी पी

एस एच ओ अनिल कुमार
एनआईटी फरीदाबाद

के अनुसार सेक्टर 21 की उक्त कोठी नं. 631 का मालिक मुंबई में रहता है तथा खाली कोठी में केवल रमेश, मनु व बुध सिंह नाम के 3 चौकीदार ही रहते थे। बराबर वाली कोठी नं. 632 के मालिक प्रमोद गुप्ता को एक बार भनक लगी कि उसके घर पर आयकर वालों का छापा लगने वाला है। इस डर से उसने 631 के पड़ोसी मालिक से बात करके अपना करीब डेढ-दो करोड़ का माल, जिसमें 35 लाख नकद व बाकी ज़ेवरात आदि थे,उसकी कोठी में रख दिये। गुप्ता ने रखवाने का काम कराया अपने नौकर (ड्राइवर)मलविंदर उर्फ़ बॉबी से।

कुछ दिन बाद बॉबी की नीयत डोल गयी और एक रात वह अपने साथी कुलदीप के साथ माल को चुराने पड़ोस की उसी कोठी में जा घुसा तो मनु की नींद खुल गयी। ऐसे में पकड़े जाने के डर से बॉबी व कुलदीप ने उसकी हत्या कर दी और माल लेकर पार हो गये। मज़े की बात यह रही कि बॉबी पर किसी का शक न गया। वह फ़रार नहीं हुआ और वहीं बदस्तूर नौकरी भी करता रहा।

उधर हत्या की सूचना पाकर जब पुलिस मौके पर यानी कोठी नं. 631 पहुंची तो कोठी नं. 632 के गुप्ता जी को भी अपने माल की चिन्ता हुई। वे भी पडौसी के नाते मौका देखने पहुंच गये ओर चुपके से वह अलमारी भी देखली जिसमें माल रखवाया था। हत्यारों ने केवल माल निकाला था और अटैची सही सलामत छोड़ गये थे।

शेष पेज 2 पर

मुकेश अंबानी मांसाहार के मुनाफे से मुंह मोड़ेगा पर नागरिकों का खून चूसने का कारोबार नहीं छोड़ेगा

मुकेश अबानी का रिलायंस उद्योग देश भर में फैले अपने 100 डिलाइट स्टोर्स से मांसाहारी भोजन बेचना तुरंत प्रभाव से बंद कर रहा है। रिलायंस ने ब्रिटेन की जमा हुआ मांसाहारी भोजन बनानेवाली एक कंपनी, 'टू सिस्टर्स फूड ग्रुप' की भारतीय शाखा, 'टू सिस्टर्स फूड्स इंडिया' के 45प्रतिशत शेयर 50 करोड़ में लिए हुए थे। वह आगे 'मुर्गा पहले आया' नाम से, अमेरिका की मशहूर 'केंटुकी फ्राइड चिकन' के मुकाबले की एक फास्ट मुर्ग फूड चेन खोलने की योजना पर भी काम कर रहा था। पर अब यह सारा निवेश बट्टेखाते में डाला जा रहा है। कहते हैं कि यह सब शाकाहारी गुजरातियों एवं जैनियों की मुकेश अबानी से की गयी अपील के परिणामस्वरूप हो रहा है। गुजराती और जैनी लोग, रिलायंस स्टोर्स के वफादार ग्राहक माने जाते हैं जबकि मुकेश खुद भी शाकाहारी है।

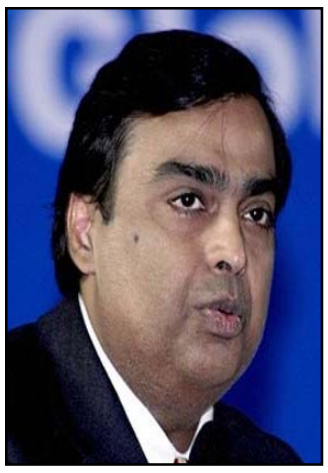

मांसाहार से तौबा के इस नैतिक धूमधड़ाके के बीच सवाल है कि मुकेश अबानी की रिलायंस इंडस्ट्री भारत के नागरिकों का खून चूसना कब बंद करेगी? तेल, गैस, ऊर्जा, परिवहन, बिजली, कोयला, रीयल एस्टेट की कीमतों को देश के नागरिकों की पहुंच से बाहर करने में अबानी बन्धुओं की सरकारों की मिलीभगत से चलने वाली अंधाधुंध मुनाफाखोरी का बहुत बड़ा हाथ है। मुकेश के रिटेल स्टोर्स भी सब्जी और फलों के दाम आसमान पर रखने के ही मंच है। सरकार को जेब में रखनेवाले मुकेश ने केन्द्रीय मंत्रिमंडल के पिछले फेरबदल में तेल मंत्री जयपाल रेड्डी का पत्ता महज इसलिए कटवा दिया था कि वह मनमाने ढंग से गैस की 8 गुनी कीमत जनता पर लाद सके। उसके टुकड़ों पर पलने वाले वीरप्पा मोइली ने तेल मंत्री बनते ही मुकेश के मुताबिक कीमतें बढ़ने देने के लिए उसी द्वारा प्रस्तावित एक पंचाट का गठन कर दिया है। केंद्र सरकार का वित्त मंत्रालय तो, चाहे किसी पार्टी की भी सरकार हो और कोई भी वित्तमंत्री हो, मुकेश के बाप धीरूभाई के जमाने से ही उनके इशारों पर चलता आया है। जनता का खून चूसना बंद करना इन अबानियों की फितरत नहीं हो सकती। क्योंकि तब निर्बाध मुनाफाखोरी लूट पर कुछ लगाम लगानी पड़ेगी जो मुकेश जैसे पूंजीपतियों के डी एन ए के बस की बात नहीं।

- अमर

ख़बर दार

लोकपाल: जोकपाल नहीं जोंकपाल !

भ्रष्टाचार निरोध के टॉनिक से शक्ति पाती 'आप' पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने लोकपाल को जोकपाल बताया। उनसे पहले भी अन्ना समर्थकों द्वारा 'जोकपाल' शब्द का इस्तेमाल किया गया था। दरअसल, सही शब्द होगा 'जोंकपाल'। क्योंकि जनता पर लादी गयी लोकपाल नाम की यह जोंक सैंकड़ों करोड़ रुपये सालाना पीकर ही ज़िदा रहेगी।

संसद ने अन्ना का लोकपाल बना दिया। अन्ना ने अनशन खोल दिया। राज्यसभा में भाजपा के नेता अरुण जेटली ने सटीक टिप्पणी की, ''हम राजनीतिक प्राणी लोकपाल के साथ रहना भी सीख जायेंगे।'' वैसे ही, जैसे देश की जनता नेताओं के भ्रष्टाचार के साथ रहना सीख गयी है। यानी नेता-जनता का पुराना 'सहजीवन' चलता रहेगा।

कमाल यह है कि इस लोकपाल के बनाने वालों में कोई भी ऐसा नहीं है जो अब दावा कर रहा हो कि लोकपाल से भ्रष्टाचार का सफ़ाया हो जायेगा। स्वयं अन्ना का कहना है कि इससे 40 प्रतिशत तक ही भ्रष्टाचार मिट पायेगा।

उनके 'पुराने' पट्ट-शिष्य अरविंद केजरीवाल के अनुसार इस लोकपाल से तो एक चूहा भी नहीं पकड़ा जायेगा। जनता तो खैर जानती ही है कि मौजूदा व्यवस्था में बने कानूनों और संस्थाओं से राज करने वालों का चेहरा तो चमक सकता है पर आम आदमी को राहत नहीं मिल सकती। सचाई यह है कि इस लोकपाल से 40 प्रतिशत तो क्या 4 प्रतिशत भी फ़र्क पड़नेवाला नहीं है। यहां तक कि इस लोकपाल से क्या कोई भी लोकपाल या कैसा भी लोकपाल बना दिया जाय, चूहा तो तब भी मरनेवाला नहीं।

सरकार व कांग्रेस की आवाज, राहुल गांधी, का कहना है कि लोकपाल की व्यवस्था अकेले भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये काफ़ी नहीं है..... 6 अन्य भ्रष्टाचार विरोधी बिल जो संसद के सामने हैं उनका भी कानून की शक्ल लेना जरूरी है। ये बिल हैं- वर्तमान भ्रष्टाचार निरोधक कानूनों में संशोधन, जूडीशियल जवाबदेही बिल, लोकसेवा गारंटी बिल, व्हिसल ब्लोअर संरक्षण बिल, पब्लिक प्रोक्योरमेंट बिल, विदेशी घूस बिल।

शेष पेज 2 पर

शारदा राठौर की आड़ में जनता को लूटता एक निगम कर्मी

बल्लभगढ़ (म.मो.) *नगर निगम बल्लबगढ ज़ोन का एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सेक्टर 7,4 व चावला कॉलोनी के निवासियों के लिये मुसीबत बना हुआ है। चपरासी स्तर का संजय नामक यह कर्मचारी सांठ-गांठ करके इस क्षेत्र का पानी बिल क्लर्क बना हुआ है। पिछले कई बरसों से इस पद पर तैनात संजय पानी के बिल बनाने तथा वसूली करने में पूरी दादागिरी के साथ मोटी हेराफ़ेरी करता आ रहा है। क्षेत्र के परेशान लोगों ने अनेकों बार इसकी शिकायत उच्चाधिकारियों को की हैं। इन पर कार्यवाही के नाम पर अधिकारियों ने जब भी इसका केवल तबादला भी करना चाहा तो तुरन्त स्थानीय विधायक शारदा राठौर के किसी सहायक का फ़ोन आ जाता है। परिणामस्वरूप तबादला रुक जाता है और लूट का धंधा नई उर्जा के साथ बदस्तूर चलता रहता है।*

जानकार बताते हैं कि यह भ्रष्टाचारी संजय जहां एक ओर जनता को ठग रहा है वहीं नगर निगम को भी अच्छा खासा चूना लगा रहा है। इसे डर है कि यदि उसका तबादला हो गया तो उसके स्थान पर आने वाला नया कर्मचारी उसके सारे घोटाले को खोल कर रख देगा। जाहिर है घोटाले खुलने के बाद केवल तबादले से काम चलने वाला नहीं, फ़िर तो और आवश्यक कार्यवाहियां भी होंगी। इसलिये वह हर कीमत पर अपनी तैनाती यहां बनाये रखना चाहता है।

प्राय: इस तरह का भ्रष्टाचारी शातिर भी काफ़ी होता है सो यह भी है। इसने शारदा राठौर अथवा उनके स्टाफ़ को यह छलावा दे रखा है कि उसके गांव अटाली के बहुत सारे वोट उसकी मुट्ठी में है। शारदा जैसी पढी-लिखी युवा नेता को इस तरह के छलावों की हकीकत शीघ्रातिशीघ्र समझ लेनी चाहिये। उन्हें यह भी समझ लेना चाहिये कि यह चोर अटाली के वोट तो दिला पायेगा या नहीं परन्तु सेक्टर 7,सेक्टर 4 चावला कॉलोनी व आस-पास के इलाके की वोटों को जरूर अपने काले कारनामों से उनके खिलाफ़ कर देगा। इस उदाहरण से यह भी समझ में आता है कि कोई भी कर्मचारी केवल तब तक ही भ्रष्टाचार कर सकता है जब तक उसे किसी राजनेता का संरक्षण प्राप्त होता है